कबीर साहेब की शब्दावली

॥ भाग ४ ॥

जिस में

उन महात्मा का ककहरा और फुटकल शब्द सुंदर और अनूठी रागों में (जैसे राग गारी, राग जँतसार) छपे हैं।

और गूढ़ शब्दों के अर्थ नोट में लिखे हैं।

इलाहाबाद

बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्क्स में प्रकाशित हुई।

सन् १९१४

[प्रथम एडिशन] [दाम ≈)

Printed at The Belvedere Steam Printing Works, Allahabad, by E. Hall.

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी व उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। अब तक जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और कोई २ जो छपी थीं तो ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक और त्रुटि और ग़लती से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ ऐसे हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये हैं और यह कार्रवाई बराबर जारी है। भर सक तो पूरे ग्रंथ मँगा कर छापे जाते हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व-साधारन के उपकारक पद चुन लिये जाते हैं। कोई पुस्तक बिना कई लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी जाती, ऐसा नहीं होता कि औरों के छापे हुए ग्रंथों की भाँति बेसमझे और बेजाँचे छाप दी जाय। लिपि के शोधने में प्रायः उन्हीं ग्रंथकार महात्मा के पंथ के जानकार अनुयायी से सहायता ली जाती है और शब्दों के चुनने में यह भी ध्यान रक्खा जाता है कि वह सर्व-साधारन की रुचि के अनुसार और ऐसे मनोहर और हृदय-बेधक हों जिन से आँख हटाने को जी न चाहे और अंतःकरन शुद्ध हो।

कई बरस से यह पुस्तक-माला छप रही है और जो जो कसरें जान पड़ती हैं वह आगे के लिये दूर की जाती हैं। कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुट-नोट में दे दिये जाते हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा जाता है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उन के संक्षेप वृत्तांत और कौतुक फुट-नोट में लिख दिये जाते हैं।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिस से वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें और जो दुर्लभ ग्रंथ संतबानी के उनको मिलें उन्हें भेज कर इस परोपकार के काम में सहायता करें।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत ख़र्च होता है तौ भी सर्व-साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ (रॉयल) से अधिक किसी का नहीं रक्खा गया है। जो लोग सब्सक्रैबर अर्थात पक्के गाहक होकर

सूचीपत्र

राग				पृष्ठ
राग मंगल	...	...	...	... १—१०
राग गारी	...	...	...	... ११—१२
राग झूलना	...	...	...	... १३—१४
राग कहरा	...	...	...	... १४—१५
दस मुकामी रेख़ता		...	...	... १६—१९
राग जँतसार	...	...	...	... १९—२०
राग बसंत	..	...	...	... २१
राग होली	...	...	...	... २१—२३
राग दादरा	...	...	...	... २३
ककहरा	...	...	...	... २४—३२
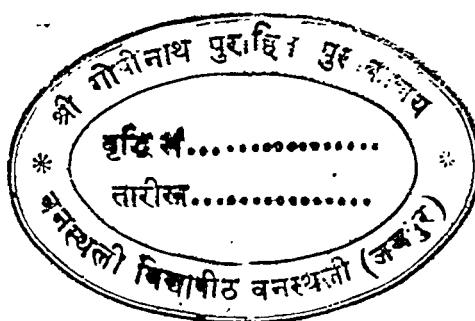
कबीर साहिब की शब्दावली

॥ चौथा भाग ॥

॥ राग मंगल ॥

(१)

पिया मिलन की आस, रहौं कब लौं खड़ी।
ऊँचे चढ़ि नहिं जाय, मनैं लज्जा भरी ॥ १ ॥
पाँव नहीं ठहराय, चढ़ूँ गिरि गिरि पड़ूँ।
फिरि फिरि चढ़हुँ सम्हारि, चरन आगे धरूँ ॥ २ ॥
अंग अंग थहराय, तो बहु विधि डरि रहूँ।
कर्म कपट मग घेरि, तो भ्रम मैं भुलि रहूँ ॥ ३ ॥
निपट बारि अनारि, तो झीनी गैल है।
अटपट चाल तुम्हारि, मिलन कस होइ है ॥ ४ ॥
तेजो* कुमति बिकार, सुमति गहि लीजिये।
सतगुरु सब्द सम्हारि, चरन चित दीजिये ॥ ५ ॥
अंतर पट दे खोल, सब्द उर लाव री।
दिल बिच दास कबीर, मिलैं तोहि बावरी ॥ ६ ॥

(२)

उठो सोहंगम नारि, प्रीति पिया सों करो।
यह उरले† ब्योहार, दूर दुरमति धरो ॥ १ ॥

*तजो, छोड़ो। †संसारी।

पाँच चोर बड़ जोर, संगि एते घने ।
इन ठगियन के साथ, मुसै घर निसु दिने ॥ २ ॥
सोवत जागत चोर, करै चोरी घनी ।
आपु भये कुतवाल, भली विधि लूटहीं ॥ ३ ॥
द्वादस नगर मँझार, पुरुष इक देखिये ।
सोभा अगम अपार, सुरति छबि पेखिये ॥ ४ ॥
होत सब्द घनघोर, संख धुनि अति घनी ।
तंतन की झनकार, बजत झीनी झिनी ॥ ५ ॥
है कोइ महरम साध, भले पहिचानिये ।
सतगुरु कहैं कबीर, संत की बानि ये ॥ ६ ॥

(३)

गुन करु बवरी गुन करु, जब लग नैहर बास हो ।
पुनि धनि जैहौ ससुरे, कंत पियारे पास हो ॥ १ ॥
जब लग राज पिता घर, गुन करि लेहु हो ।
सासु ननद के बुलवन, उत्तर का देहु हो ॥ २ ॥
आये भाट बराम्हन, लगन धराइन हो ।
लगन सुनत गवने कै, मुँह कुम्हिलाइन हो ॥ ३ ॥
बाजन बाजै गहगहा, नगर उठै झनकार हो ।
प्रीतम कहूँ न देखल, आयो चालनहार हो ॥ ४ ॥
लै रे उतारिन तेहि घर, जहँ दिस न दुवार हो ।
मन मन झुरवै दुलहिनि, काह कीन्ह करतार हो ॥५॥
जो मैं जनतिउँ ऐसन, गुन करि लेतिउँ हो ।
जातिउँ साहिब के देसवाँ, परम सुख पैतिउँ हो ॥ ६ ॥
चेति ले बवरी चेति ले, चेति लेहु दिन चारी हो ।
यह संगत सब छूटि है, कहत कबीर बिचारी हो ॥७॥

(४)

मंगल एक अनूप, संत जन गावहीं
उपजै प्रेम विलास, परम सुख पावहीं ॥ १ ॥
सतगुरु बिप्र बुलाय, तो लगन लिखावहीं ।
संत कुटुम परिवार, तो मंगल गावहीं ॥ २ ॥
बहु विधि आरति साजि, तो चौक पुरावहीं ।
मोतियन थार भराइ के, कलस लेसावहीं ॥ ३ ॥
हीरा हंस बिठाय, तो सब्द सुनावहीं ।
जेहि कुल उपजे संत, परम पद पावहीं ॥ ४ ॥
मिटो करम को अंक, जबै आगम भयो ।
पायो सूरति सोहं, संसय सब गयो ॥ ५ ॥
भक्ति हेत चित लाय, तो आरति उर धरो ।
तजि पाखँड अभिमान, तो दुरमति परिहरो ॥ ६ ॥
तन मन धन औ प्रान, निछावर कीजिये ।
त्रिगुन फन्द निरुवारि, पान निज लीजिये ॥ ७ ॥
यह मंगल सत लोक के, हंसा गावहीं ।
कहैं कबीर समुझाय, बहुरि नहिं आवहीं ॥ ८ ॥

(५)

पूरनमासी आदि, जो मंगल गाइये ।
सतगुरु के पद परसि, परम पद पाइये ॥ १ ॥
प्रथमे मँदिल झराइ के, चँदन लिपाइये ।
नूतन बस्तर आनि के, चँदवा तनाइये ॥ २ ॥
(तब) पूरन गुरु के हेत, तो आसन बिछाइये ।
गुरु के चरन प्रछालि, तहाँ बैठाइये ॥ ३ ॥

गज मोतियन के। चैाक , सो तहाँ पुराइये ।
ता घर नरियर धोति , मिष्टान्न धराइये ।। ४ ।।
केरा और कपूर , ते। बहुबिधि लाइये ।
अष्ट सुगंध सुपारि , तो पान मँगाइये ।। ५ ।।
पल्लौ सहित सो कलसा, जोति बराइये ।
ताल मृदंग बजाइ के , मंगल गाइये ॥ ६ ॥
साधु संत सँग लैके , आरति उतारिये ।
आरति करि पुनि नरियर , तबहिँ मोराइये ।। ७ ।।
पुरुष के। भोग लगाइ , सखा मिलि पाइये ।
जुग जुग छुधा बुझाइ , तो पाइ अघाइये ।। ८ ।।
परमानन्दित होय , तो गुरुहिँ मनाइये ।
कहैँ कबीर सत भाय , तो लोक सिधाइये ॥ ९ ॥

(६)

सत्त सुकृत सत नाम , सुमिरु नर प्रानी हो ।
सुमति से रचहु बियाह, कुमति घर छाड़ी हो ।।१ ।।
सत्त सुकृत कै माँड़ो , तो रुचि रुचि छावो हो ।
सतगुरु बिप्र बुलाय कै, कलस धरावो हो ॥ २ ॥
पहिली भँवरिया बेद , पढ़ै मुनि ज्ञानी हो ।
दुसरि भँवरिया तिरथ, जा को निरमल पानी हो ॥३॥
तिसरी भँवरिया भक्ति , दुबिधा जिनि लावो हो ।
चैाथी भँवरिया प्रेम , प्रतीत बढ़ावो हो ॥४॥
पँचईं भँवरिया अलख , सँग सुमति सयानी हो ।
छठईं भँवरिया छिमा , जहँ अमी नहानी हो ॥ ५ ॥

सतईं भँवरिया साहिब मिले, मिटि आवा जानी हो।
प्रेम मगन भइ भाँवर, उठत धुन तानी हो॥ ६॥
सतगुरु गाँठि प्रेम की, छोड़ि ना छूटै हो।
लागि रहो गुरु ज्ञान, डोरि ना टूटै हो॥ ७॥
दास कबीर कै मंगल, जो कोइ गावै हो।
बसै सत लोक मैं जाइ, अमर पद पावै हो॥ ८॥

(७)

मानुष जन्म अमोल, सुकृत को धाइये।
सुरति कुवारी कन्या, हंसा सँग ब्याहिये॥ १॥
सतगुरु बिप्र बुलाइ के, लगन धराइये।
बेगै कन्या घराइ, बिलँब ना लाइये॥ २॥
पाँच पचीस तरुनिया*, तो मंगल गाइये।
चौरासी के दुक्ख, बहुरि ना लाइये॥ ३॥
सुरति पुरुष सँग बैठि, हाथ दोउ जोरिये।
जम से तिनुका तोरि, भँवरि भल फेरिये॥ ४॥
सुरति कियो है सिंगार, पिया पहँ जाइये।
जनम करम के अंक, सो तुरत मिटाइये॥ ५॥
हंसा कियो है बिचार, सुरति सों अस कही।
जुग जुग कन्या कुँवारि, एतक दिन कहँ रही॥ ६॥
सुरति कियो है प्रनाम, पिया तुम सत कही।
सतगुरु कन्या कुँवारि, एतक दिन तहँ रही॥ ७॥
प्रेम पुरुष कै साज, अखँड लेखा नहीं।
अमृत प्याला पिये, अधर महँ झूलही॥ ८॥

*युवा स्त्री।

पान परवाना पाय, तो नाम सुनावही।
सतगुरु कहैँ कबीर, अमर सुख पावही ॥ ९ ॥

(८)

आजु लगे पुनवासी, तो मंगल गाइये।
बस्तर सेत आनि के, चँदवा तनाइये ॥ १ ॥
प्रेम के मंदिल झारि, चँदन छिरकाइये।
सतगुरु पूरा होय, तो चौक पुराइये ॥ २ ॥
जाजिम गद्दी बिछाइ के, तकिया सजाइये।
गुरु के चरन पखारि, तो आसन कराइये ॥ ३ ॥
गज मोती मँगवाइ के, चौक पुराइये।
ता पर मेवा मिष्टान्न, तो पान चढ़ाइये ॥ ४ ॥
पल्लौ सहित तहँ कलस, तो आनि धराइये।
पाँच जोति कै दीपक, तहवाँ बराइये ॥ ५ ॥
जल थल सील सुधारि, तो जोति जगाइये।
साध संत मिलि आइ के, आरति उतारिये ॥ ६ ॥
ताल मृदंग बजाइ, तो मंगल गाइये।
आरति करु पुनवासी, तो नरियर मोरिये ॥ ७ ॥
जम सोँ तिनुका तोरि, तो फंद छुड़ाइये।
पुरुष को भोग लगाइ, हंसा मिलि पाइये ॥ ८ ॥
जुग जुग छुधा बुझाइ के, गुरु को मनाइये।
कहैँ कबीर सत भाव, सो लोक सिधाइये ॥ ९ ॥

(९)

सतगुरु जौहरि आय, तो मानिक लाइया।
काया नगर मँझारि, बजार लगाइया ॥ १ ॥

चहुँ मुख लागि दुकान, तो झिलिमिलि ह्वै रहे ।
पारख सौदा बिसाहि*, अधर डोरि झुलि रहे ॥ २ ॥
जिन जिन हंसा गाहक, बस्तु बिसाहिया ।
पाया सब्द अमोल, बहुरि नहिं आइया ॥ ३ ॥
बारहवानी† के ज्ञान, तो सोई सुरंग है ।
निर्गुन सब्द अमोल, साहिब को अंग है ॥ ४ ॥
करि ले सोरहो सिंगार, तो पिया को रिझाइये ।
दिल बिच दास कबीर, हंसा समुझाइये ॥ ५ ॥

(१०)

साहिब को नाम अखंड, और सब खंड है ।
खंड है मेरु सुमेरु, खंड ब्रह्मंड है ॥ १ ॥
नारी सुत धन धाम, सो जीवन बंध है ।
लख चौरासी जीव, परे जम फंद है ॥ २ ॥
चंचल मन करु थीर, तबै भल रंग है ।
उलटि निरंतर पीव, तो अमृत संग है ॥ ३ ॥
जिन के साहिब से नेह, सोई निरबंध है ।
उन साधन के संग, सदा आनंद है ॥ ४ ॥
दया भाव चित राखु, भक्ति को अंग है ।
कहैं कबीर चित चेतो, जक्त पतंग है ॥ ५ ॥

(११)

[पंचायन मंगल]

सत्त सुकृत सत नाम को, आदि मनाइये ।
सुर्त जोग-संतायन‡, निसि दिन ध्याइये ॥

*मोल ले । †ख़ालिस सोना । ‡कबीर साहिब ।

सतगुरु चरन मनाय, परम पद पाइये।
करि दंडवत प्रनाम, तो मंगल गाइये॥
गावै जो मंगल कामिनी, जहँ सत्त सीतल थान है।
परम पावन ठाम अबिचल, जहँ ससि सुरज की खान है॥
मानिक पुर इक गाँव अबिचल, जहँ न रैन बिहानि है।
कहँ कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नाम हिं जानि है॥१॥
अष्ट खंड जहँ कामिनि, आरति साजहीं।
चार भानु की सोभा, अंग बिराजहीं॥
दृष्टि भाव जहँ होत, हंस सुख पावहीं।
हंसन हंस बिलास, कामिनि सचि* मानहीं॥
सचि मानि कामिनि सुक्ख, हंसा आगे को पग धारहीं।
सुख सागर सुख बास मैं, जहँ सुकृत दरस निहारहीं॥
पतित-पावन भये हंसा, काया सोरह भान है।
कहँ कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नामहिं जानि है॥२॥
सुख सागर की सोभा, कहा बिसेखिये।
कोटिन रबि चहुँ ओर, उदय तहँ पेखिये॥
धरनि अकास जहाँ नहिं, हीरा जगमगे।
उहवाँ दीनदयाल, हंस के सँग लगे॥
सँग लागि उहवाँ हंस के, कहै तुम हमैं भल चीन्ह हो।
अंबु करि सो दीप दिखावो, प्रथम पुर्ष जो कीन्ह हो॥
असंख रबि औ कोटि दामिनि, पुहुप सेज अरघान† है।
कहँ कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नामहिं जानि है॥३॥

---

*प्रीति भाव। †अति सुगंधित।

आदि अंत जोग-जीत, हंस के सँग लगे ।
पंकज* करिय अँजोर , होत साहिब मिले ॥
दोउ कर जोरि मनाय , बहुत बिनती करी ।
साहिब दरसन देव , हंस सरधा धरी ॥
दया कीन्हा पुर्ष बिहँसे , मस्तक दरस दिखाइ हो ।
अमृत फल जब चार दीन्हा, सकल हंस मिलि पाइ हो ॥
अटल काया जब भई , मंजिल† करी अस्थान है ।
कहैं कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नामहिँ जानि है ॥४॥
सदा बसंत जहँ फूलो , कुंज सुहावहीं ।
अछै बृच्छ तर हंसा , सेज बिछावहीं ॥
चहुँ दिसि हंस की पाँती, हीरा जगमगै ।
सोरह रवि को रूप , अंग मैं चमकहीं ॥
अंग हंसा चमक सोभा , सूर सोरह पावहीं ।
धन सतगुरू को सार बीरा , पुर्ष दरस दिखावहीं ॥
हंस सुजन जन अंस भैंटे , हंस को पहिचानि है ।
कहैं कबीर सो हंस पहुँचे , जो सत्त नामहिं जानि है ॥५॥

(१२)

[बेदी]

लगन लगी सत लोक , सुकृत मन भावहीं ।
सुफल मनोरथ होय , तो मंगल गावहीं ॥१॥
चलु सखि सुरति संजोय, अगम घर उठि चलो ।
हंस सरूप सँवारि , पुरुष सोँ तुम मिलो ॥२॥

---

*कँवल । †ठिकाना ।

कनक पत्र पर अंक, अनूपम अति किया।
तुमहिँ सकल संदेस, लगन पिय लिख दिया ॥३॥
लिखि दिया सब्द अमोल, सोहंग सुहावता।
पूरन परम-निधान, ताहि बल जम जिता ॥४॥
तत करनी कर तेल, हरदि हित लावहीँ।
कंकन नेह बँधाय, मधुर धुन गावहीँ ॥५॥
अच्छत थार भराय, तो चौक पुरावहीँ।
हीरा हंस बिठाय, तो सब्द सुनावहीँ ॥६॥
कंचन खंभ अँजोर, अधर चारो जुगा।
बाजत अनहद तूर, सेत मंडप छजा ॥७॥
अगर अमी भरि कुम्भ, रतन चौरी रची।
हंस पढ़ैँ तहँ सब्द, मुक्ति बेदी रची ॥८॥
हस्त लिये सत केल, ज्ञान गढ़ बंधना।
मोच्छ सरूपी मौर, सीस सुन्दर बना ॥९॥
सुरति पुरुष सोँ मेल, तो भाँवरि परि गई।
अमर तिलक ताम्बूल, सुघर माला दई ॥१०॥
दीन्हो सुरति सुहाग, पदारथ चारि को।
निस दिन ज्ञान बिचार, सब्द निर्वार को ॥११॥
यह मंगल सत लोक के, हंसा गावहीँ।
कहैँ कबीर समुझाय, बहुरि नहिँ आवहीँ ॥१२॥

॥ राग गारी ॥

सतगुरु साहिब पाहुन आये, का ले करौं मेहमानी जी ॥१॥
निरति के गँडुवा गँगा जल पानी, परसे सुमति सयानी जी २
प्रथम लालसा लुचई* आई, जुगत जलेबी आनी जी ॥३॥
भाव कि भाजी सील कि सेमा, बने कराल करेला जी ॥४॥
हिय कै हींग हृदय कै हरदी, तत्त के तेल बघारे जी ॥५॥
डारे धोइ बिचार के जल से, करमन कै करुवाई जी ॥६॥
यह जेवनार रच्यो घट भीतर, सतगुरु न्योति बुलाये जी ॥७॥
जेवन बैठे साहिब मोरे, उठत प्रेम रस गारी जी ॥८॥
कहैं कबीर गारी की महिमा, उपमा बरनि न जाई जी ॥९॥

(२)

जो तूँ अपने पिय की प्यारी, पिया कारन सिंगार करो ॥ टेक ॥

जा के जुगुत की ककही, करम केस निरुवार करो ।
जा के तत के तेल, प्रेम कि डोरी से चोटी गुहो ॥ १ ॥
जा के अलख के काजर, बिरह कि बेंदी लिलार दई ।
जा के नेह नथुनिया, गुंज कै लटकन झूलि रहे ॥ २ ॥
जा के सुमति के सूत, दया हमेल हिये माहिँ परी ।
जा के चित की चौकी, अकिल के कँगना झलकि रहे ॥ ३ ॥
जा के चोप की चुनरी, ज्ञान पछेली चमकि रही ।
जा के तिल के छल्ले, सब्द के बिछुवा बाजि रहे ॥ ४ ॥

*पूरी ।

तुम एतन धनि पहिरो , रूसल पिया के मनाइ लई ।
उठि के चलो सुहागिनि , निरखत बदन हुलास भरी ॥५॥
पिय तुम मो तन हेरो , मैं हौं दासी तुम्हार खड़ी ।
गारी गावै कबीरा , साधो सुनो बिचार धरी ॥ ६ ॥

(३)

[नरियर मोरन]

बनजारिन बिनती करै , सुन साजना ।
नरियर लीन्हो हाथ , संत सुन साजना ॥ १ ॥
बिना बीज को बृच्छ है , सुन साजना ।
बिन धरती अंकूर , संत सुन साजना ॥ २ ॥
ता को मूल पताल है , सुन साजना ।
नरियर सीस अकास , संत सुन साजना ॥ ३ ॥
बिना सब्द जिनि मोरहू , सुन साजना ।
जीव एकोतर हानि , संत सुन साजना ॥ ४ ॥
गुरु के सब्द ले मोरहू , सुन साजना ।
फूटै जम को कपार , संत सुन साजना ॥ ५ ॥
सखियाँ पाँच सहेलरी , सुन साजना ।
नौ नारी बिस्तार , संत सुन साजना ॥ ६ ॥
कहैं कबीर बघेल* सोँ , सुन साजना ।
रानी इन्द्रमती सरदार , संत सुन साजना ॥ ७ ॥

---

* बघेलखंड के निवासी धर्म्मदास जी ।

॥ राग झूलना ॥

(१)

करेगा सोई करता ने हुकुम किया,
सब्द का संग समसेर बंका ।
ज्ञान का चौँर ले प्रेम का पंख ले,
खैँच के तेग छोड़ाव संका ॥ १ ॥
कड़ी कमान जब ऐँठि के खैँचिया,
तीन बेर टनकार सहज टंका ।
मगन मुसक्यात गगन मैँ कूदिया,
ढील कर बाग मैदान हंका ॥ २ ॥
पाँच पच्चीस औ तीन भागा फिरै,
बड़े सहुकार औ राव रंका ।
कहैँ कबीर कोइ संत जन जौहरी,
बड़े मैदान मोँ दियो डंका ॥ ३ ॥

(२)

खुदी को छाड़ि खुदाय को याद कर,
वो खुदाय क्या दूर है जी ॥ १ ॥
खुद बोलते को तहकीत* करि ले,
हर दम हजूर जरूर है जी ॥ २ ॥
ठौर ठौर क्या भकटत फिरो,
करो गौर तुम हीँ मैँ नूर है जी ॥ ३ ॥
कवीर का कहना मानि ले अब,
परवाना सहित मँजूर है जी ॥ ४ ॥

---

*तहकीक ।

(३)

चलु रे जीव जहँ हंस को देस है,
वसत कवीर आनंद सोई ।
काल पहुँचै नहीं सोग व्यापै नहीं,
रहैगा हंस तहँ संग होई ॥ १ ॥
यह परपंच है सकल जाहि को,
ता मैं रहे का पार पावै ।
कठिन दरियाव जहँ जीव सब वाझिया,
माया रूप धरि आपै खेलावै ॥ २ ॥
[तहँ] खेलावै सिकार जम त्रिगुन के फंद मैं,
वाँधि के लेत सब जीव मारी ।
मोह के रूप तहँ नारि इक ठाढ़ि है,
जहाँ तुम जाहु तहँ मारि डारी ॥ ३ ॥
तेहि देखि सब जीव जल के सरूप भे,
तदपि परतीत कोइ नाहिँ पाई ।
कहैँ कवीर परतीत कर सब्द की,
काम औ क्रोध कमान तोरी ॥ ४ ॥

॥ राग कहरा ॥

(१)

सुनो सयानी अकथ कहानी, गुरु अपने का सनेसा हो ॥१॥
जो पिय मारै औ झझकारै, वाहर पगु ना दीन्हा हो ॥२॥
निरत पिया को अंतर ता को, सब्द नेह ना छूटै हो ॥ ३ ॥

जैसे डोरी उड़ै अकासा, सब्द डोरि नहिं टूटै हो ॥४॥
डोरी टूटै खसै भूमि पर, तब पिय बाद गँवावा हो ॥५॥
सिर पर गागर बात सखिन सोँ, चित से गगर न छूटै हो॥६॥
दास कबीर के निर्गुन कहरा, महरम होय सो बूझै हो ॥७॥

(२)

बिमल बिमल अनहद धुनि बाजै,
समुझि परै जब ध्यान धरै ॥ टेक ॥
कासी जाइ कर्म सब त्यागै,
जरा मरन से निडर रहै।
बिरले समुझि परै वह गलिया,
बहुरि न प्रानी देँह धरै ॥ १ ॥
किँगरी संख झाँझ डफ बाजै,
अरुझा मन तहँ ख्याल करै।
निरंकार निरगुन अबिनासी,
तीन लोक उँजियार करै ॥ २ ॥
इँगला पिँगला सुखमन सोधो,
गगन मँदिल मैँ जोति बरै।
अष्ट कँवल द्वादस के भीतर,
वहँ मिलने की जुगत करै ॥ ३ ॥
जीवन मुक्ति मिले जेहि सतगुरु,
जन्म जन्म के पाप हरै।
कहैँ कबीर सुनो भाइ साधो,
धिरज बिना नर भटकि मरै ॥ ४ ॥

॥ दस मुकामी रेखता ॥

चला जब लोक को सोक सब त्यागिया।
हंस को रूप सतगुरु बनाई ॥
भृंग ज्यों कीटि को पलटि भृंगै किया,
आप सम रंग दै लै उड़ाई ॥ १ ॥
छोड़ि नासूत मलकूत को पहुँचिया,
बिस्नु की ठाकुरी दीख जाई।
इन्द्र कुबेर रंभा जहाँ नृत करैं,
देव तैंतीस कोटिक रहाई ॥ २ ॥
छोड़ि बैकुंठ को हंस आगे चला,
सून्य मैं जोति जगमग जगाई।
जोति परकास मैं निरखि निःतत्व को,
आप निर्भय भया भय मिटाई ॥ ३ ॥
अलख निर्गुन जेही बेद अस्तुति करै,
तीनहूँ देव को है पिताई।
भगवान तिन के परे सेत मूरत धरे,
भग की आनि* तिनको रहाई ॥ ४ ॥
चार मोकाम पर खंड सोरह कहे,
अंड को छोर ह्याँ तैं रहाई।
अंड के परे अस्थान आचिंत को,
निरखिया हंस जब उहाँ जाई ॥ ५ ॥
सहस औ द्वादसौ रूह है संग मैं,
करत किलोल अनहद बजाई।

---

*क़दर।

तासु के बदन की कौन महिमा कहौं,
भासती देँह अति नूर छाई ॥ ६ ॥
महल कंचन बने मनी ता मैं जड़े,
बैठ तहँ कलस अखंड छाजे ।
अचिंत के परे अस्थान सोहंग का,
हंस छत्तीस तहवाँ बिराजे ॥ ७ ॥
नूर का महल औ नूर की भूमि है,
तहाँ आनन्द सोँ दुंद भाजे ।
करत किलोल बहु भाँति से संग इक,
हंस सोहंग के जो समाजे ॥ ८ ।
हंस जब जात षट चक्र को बेधि के,
सात मोकाम मैं नजर फेरा ।
परे सोहंग के सुरति इच्छा कही,
सहस बावन जहाँ हंस हेरा ॥ ९ ॥
रूप की रासि* तेँ रूप उन को बनो,
नाहिँ उपमाहिँ दूजी निबेरा ।
सुर्त से भैँटि के सब्द की टेक चढ़ि,
देखि मोकाम अंकूर केरा ॥ १० ॥
सून्य के बीच मैं बिमल बैठक तहाँ,
सहज अस्थान है गैब केरा ।
नवो मोकाम यह हंस जब पहुँचिया,
पलक बिलंब ह्वाँ कियो डेरा ॥ ११ ॥

---

*ढेर ।

तहाँ से डोरि मक* तार ज्यों लागिया,
ताहि चढ़ि हंस गौ दै दरेरा ।
भये आनन्द सोँ फन्द सब छोड़िया,
पहुँचिया जहाँ सतलोक मेरा ॥ १२ ॥
हंसनी हंस सब गाय बजाय के,
साजि के कलस वोहि लेन आये ।
जुगन जुग बीछुरे मिले तुम आइ के,
प्रेम करि अंग सोँ अंग लाये ॥ १३ ॥
पुरुष ने दरस जब दीन्हिया हंस को,
तपनि बहु जन्म की तब नसाये ।
पलटि के रूप जब एक सोँ कीन्हिया,
मनहुँ तब भानु षोड़स उगाये ॥ १४ ॥
पुहुप के दीप पियूष† भोजन करै,
सब्द की देँह जब हंस पाई ।
पुष्प के सेहरा हंस औ हंसिनी,
सच्चिदानन्द सिर छत्र छाई ॥ १५ ॥
दिपै बहु दामिनी दमक बहु भाँति की,
जहाँ घन सब्द की घुमड़ लाई ।
लगे जहँ बरसने गरज घन घोर के,
उठत तहँ सब्द धुनि अति सुहाई ॥ १६ ॥
सुनैँ सोइ हंस तहँ जुत्थ के जुत्थ है,
एक ही नूर इक रंग रागे ।

---

*मकड़ी । †अमृत ।

करत विहार मन भावनी मुक्ति मे,
कर्म औ भर्म सब दूरि भागे ॥ १७ ॥
रंक औ भूप कोइ परखि आवै नहीं,
करत किलोल बहु भाँति पागे ।
काम औ क्रोध मद लोभ अभिमान सब,
छाड़ि पाखंड सत सब्द लागे ॥ १८ ॥
पुरुष के बदन की कौन महिमा कहौं,
जगत मैं उभय* कछु नाहिं पाई ।
चन्द्र औ सूर गन जोति लागै नहीं,
एकहू नख की परकास भाई ॥ १९ ॥
पान परवान जिन वंस का पाइया,
पहुँचिया पुरुष के लोक जाई ।
कहैं कबीर यहि भाँति सोँ पाइ है,
सत्त की राह सो प्रगट गाई ॥ २० ॥

॥ राग जँतसार† ॥

(१)

सुरति मकरिया‡ गाड़हु हे सजनी—अहे सजनी ।
दूनों रे नयनवाँ जोतिया लावहु रे की ॥ १ ॥
मन धरु मन धरु मन धरु हे सजनी—अहे सजनी ।
अइसन समइया फिरि नहिं पावहु रे की ॥ २ ॥
दिन दस रजनी हे सुख करु सजनी—अहे सजनी ।
इक दिन चाँद छपायल रे की ॥ ३ ॥

*दूसरा अर्थात सदृश । † जाँता या चक्की पर गाने की गीत । ‡चक्की का कीला ।

सँगहिँ अछत पिय भरम भुलइली—अहे सजनी ।
मोरे लेखे पिया परदेसहिँ रे की ॥ ४ ॥

नव दस नदिया अगम बहे सोतिया हो—अहे सजनी ।
बिचहिँ पुरइनि* दह† लागल रे की ॥ ५ ॥

फुल इक फुलले अनुप फुल सजनी—अहे सजनी ।
तेहि फुल भँवरा लुभाइल रे की ॥ ६ ॥

सब सखि हिलि मिलि निज घर जाइब—अहे सजनी ।
समुँद लहरिया समाइब रे की ॥ ७ ॥

दास कबीर यह गवलैँ लगनियाँ हो—अहे सजनी ।
अब तो पिया घर जाइब रे की ॥ ८ ॥

(२)

अपने पिया की मैं होइबौँ सोहागिनी—अहे सजनी ।
भइया तजि सइयाँ सँग लागब रे की ॥ १ ॥

सइयाँ के दुअरिया अनहद बाजा बाजै—अहे सजनी ।
नाचहिँ सुरति सोहागिनि रे की ॥ २ ॥

गंग जमुन के औघट घटिया हो—अहे सजनी ।
तेहि पर जोगिया मठ छावल रे की ॥ ३ ॥

देहौँ सतगुर सुर्ती के बिरवा हो—अहे सजनी ।
जोगिया दरस देखे जाइब रे की ॥ ४ ॥

दास कबीर यह गवलैँ लगनियाँ हो—अहे सजनी ।
सतगुर अलख लखावल रे की ॥ ५ ॥

॥ राग बसंत ॥

खेलत सतगुरु ऋतु बसंत । मुक्ति पदारथ मिले कंत ॥टेक॥
धरती रथ चढ़ि देखो देस । घर घर निरखो नृप नरेस ॥१॥
जोजन चार पैतरे फेर । बाँधि मवासी गढ़ मेँ घेर ॥२॥
अधर निअच्छर गहो ढाल । भागि चलै जब धरौ काल॥३॥
सर* सुधारि घट कर कमान । चंद चिला† गहि मारो बान॥४॥
साधु संग रन करो जोर । तब घट छोड़ै चतुर चोर ॥५॥
ऐसी बिधि से लड़ै सूर । काल मवासी होय दूर ॥६॥
अधर निअच्छर गहो डोर । जो निज मानो बचन मोर॥७॥
धरती तुरँग‡ होइ असवार । कहै कबीर भव उतरो पार॥८॥

॥ राग होली ॥

(१)

सतगुरु दीन-दयाल पिरीतम पाइया ॥ टेक ॥
बंदीछोर मुक्ति के दाता, प्रेम सनेही नाम ।
साध संत के बसी अभिलाषा, सब बिधि पूरन काम ॥१॥
जैसे चात्रिक स्वाँती जल को, रटतु है आठो जाम ।
ऐसी सुरति लगी जिन सतगुरु, सो पाये सुख धाम ॥२॥
आनँद मंगल प्रेम चारि§ गुरु, अमर करत हैं जीव ।
सुमिरन दे सतलोक पठाये, ऐसे समरथ पीव ॥ ३ ॥
चरन कमल सतगुरु की सेवा, मन चित गहु अनुराग ।
कहैं कबीर अस होरी खेलै, जा के पूरन भाग ॥ ४ ॥

---

* तीर । † चिल्ला=कमान की डोर । ‡ घोड़ा । §आचार्य ।

(२)

ऐसी होरी खेल, जा मैं हुरमत लाज रहो री ॥ टेक ॥
सील सिँगार करो मोर सजनी, धीरज माँग भरो री ।
ज्ञान गुलाल लगावो सजनी, अगम घर सूझि परो री ॥१॥
उठत धमार काया गढ़ नगरी, अनहद बेनु बजो री ।
फगुवा खेलूँ अपने साहिब सँग, हिरदे साँच धरो री ॥२॥
खेती करो जग आइ के साधो, चेला सिष न बटोरी ।
नइया अपने पार उतरन को, सतगुरु दया करो री ॥३॥
मने मने की सिर पर मेटुकी, नाहक बोझ मरो री ।
मेटुकि उतारि मिलो तुम पिय सोँ, सत्त कबीर कहो री ॥४॥

(३)

माया भ्रम भारी सगरो जग जीति लियो ॥ टेक ॥
गज गामिनि कठोर है माया, संसय कीन्ह सिँगारा ।
लै के डारै मोह नदी मैँ, कोइ न उतरै पारा ॥ १ ॥
निज आँखिन मैँ अंजन दीन्हा, पंडित आँखि मैँ राई ।
जोगी जती तपी सन्यासी, सुर नर पकरि नचाई ॥ २ ॥
गोरख दत्त बसिष्ठ ब्यास मुनि, खेलन आये फागा ।
सिंगी ऋषि पारासर आये, छोड़ि छोड़ि बैरागा ॥ ३ ॥
सात दीप और नवो खंड मैँ, सब से फगुवा लीन्हा ।
ठाढ़ कबीर सोँ अरज करतु है, तुमहीं ना कछु दीन्हा ॥४॥

(४)

खेलो खेलो सोहागिनि होरी ।
चरन सरोज* पिया हित जानो, रज कै केसर घोरी ॥१॥

---

* कमल ।

सोहँग नारि जहँ रंग रचो है, बिच मैँ सुखमन जोरी ।
सदा सजीवन प्रेम पिया को, गहि लीजे निज डोरी ॥२॥
लिये लकुट कर बरन बिचारो, प्रेम प्रीति रँग बोरी ।
रँग अनेक अनुभव गहि राचो, पिय के पाँव परो री ॥३॥
कहैँ कबीर अस होरी खेलो, कोई नहिँ झकझोरी ।
सतगुरु समरथ अजर अमर हैँ, तिन के चरन गहो री ॥४॥

॥ राग दादरा ॥

(१)

बलम सँग सोइ गइ दोइ जनी ॥ टेक ॥
इक ब्याही इक अरधी* कहावै, दूनोँ सुभग सुहाग भरी ॥१॥
ब्याही तो उँजियार दिखावै, अरधी लै अँधियार खड़ी ॥२॥
ब्याही तो सुख निँदिया सोवै, अरधी दुख सुख माथ धरी॥३॥
कहैँ कबीर सुनो भाइ साधो, दूनोँ पिया पियारि रहीँ॥४॥

(२)

रमैया की दुलहिन ने लूटा बजार ॥ टेक ॥
सुरपुर लूटा नागपुर लूटा, तिन लोक मचि गइ हाहा कार॥१॥
ब्रह्मा लूटे महादेव लूटे, नारद मुनि के परी पिछार† ॥२॥
सिंगी की मिंगी करि डारी, पारासर के उदर बिदार ॥३॥
कनफूँका चिदाकासी लूटे, जोगेसुर लूटे करत बिचार ॥४॥
हम तो बचिगये साहिब दया से, सब्द डोर गहि उतरे पार॥५॥
कहैँ कबीर सुनो भाइ साधो, इस ठगनी से रहो हुसियार ॥६॥

---

*धरूक, सुरैतिन । †पीछे ।

ककहरा

[क] काया कुंज करम की बाड़ी, करता बाग लगाया।
किनका ता मैं अजर समाना, जिन बेली फैलाया॥
पाँच पचीस फूल तहँ फूले, मन अलि* ताहि लुभाया।
वोहि फूलन के बिषै लपटि रस, रमता राम भुलाया॥
मन भँवरा यह काल है, बिषै लहरि लपटाय।
ताहि संग रमता बहै, फिरि फिरि भटका खाय॥१॥
[ख] खालिक की तो खबर नहीं कछु, खाब ख्याल मैं भूला।
खाना दाना जोड़ा घोड़ा, देखि जवानी फूला॥
खासा पलँग सेजबँद तकिया, तोसक फूल बिछाया।
नवल नारि लै ता पर पौढ़ा, काम लहर उमड़ाया॥
लागी नारी प्यारि अति, छुटा धनी सों नेह।
काल आय जब ग्रासिहै, खाक मिलेगी देह॥ २॥
[ग] गुरू कीजिये निरखि परखि कै, ज्ञान रहनि का सूरा।
गर्ब गुमान माया मद त्यागे, दया छिमा सत पूरा॥
गैल बतावै अमर लोक की, गावै सतगुरु बानी।
गज मस्तक अंकुस गहि बैठे, गुरुवा गुन गलतानी॥
पाप पुन्य की आस नहिं, करम भरम से न्यार।
कृत्रम पाखँड परिहरे, अस गुरु करो बिचार॥३॥
[घ] घट गुरु ज्ञान बिना अँधियारा, मोह भरम तम छाया।
सार असार बिचारत नाहीं, अमी धोख बिष खाया॥

---

*भँवरा।

घर का घिर्त रेत मैं डारै, छाछ ढूँढ़ता डोलै।
कंचन देके काँच बिसाहै*, हरू गरू†नहिं तौलै॥
ज्ञान बिना नर बावरा, अंध कूर मतिहीन।
साँच गहै नहिं परखि कै, झूठै के आधीन॥ ४॥
[ङ] डंभ मनै मत मानियो, सत्त कहौं परमारथ जानी।
उपजै सुख तब हृदय तुम्हारे, जब परखो मम बानी॥
ऊँचा नीचा कोइ नहीं रे, करम कहावै छोटा।
जासु के अंदर करकै नखरा, सोई माल है खोटा॥
ऊपर जटा जनेऊ पहिने, मेला तिलक सुहाय।
संसय सोक मोह भ्रम अंदर, सकलै मैं रहु छाय॥५॥
[च] चित से चेतहु चतुर चिकनियाँ, चैन कहा तुम सोया।
चतुराई सब भाड़ परैगी, जन्म अचेते खोया॥
चौथा पन तेरा अब लागा, अजहुँ चेत गुरु ज्ञान।
नहिं तो परैगो घोर अँधेरो, फिरि पाछे पछितान॥
ऐसे पाटन आइकै, सौदा करौ बनाय।
जो चूकौ तुम जन्म यह, तो दुख भुगतौ जाय॥ ६॥
[छ] छन मैं छल बल सब निकसत हैं, जब जम छँकै आई।
छटपट करिहौ बिष ज्वाला तें, तब कहु कौन सहाई॥
जम का मुगदर ऊपर बरसै, तब को करै उबारी।
तात मातु भ्राता सुत सज्जन, काम न आवै नारी॥
छूट्यो सर्ब सगाई, भया चोर का हाल।
संगी सब न्यारे भये, आप गये मुख काल॥ ७॥
[ज] जम के पाले पड़ै जीव, तब कछू बात नहिं आवै।
जोर कछू काबू नहीं, सिर धुनि धुनि पछितावै॥

*मोल ले। †हल्का भारी।

जब ले पहुँचावैं चित्रगुप्त पहँ, लिखनी लिखै बिचारि।
दयाहीन गुरुबिमुखी ठहरै, अग्नि कुंड लै डारि॥
जन्म सहस अजगर को पावै, बिष ज्वाला अकुलाय।
ता पाछे कृमि बिष्टा कीन्हा, भूत खानि को जाय॥८॥

[झ] झंखन झुरवन सबही छोड़ो, झसकि करो गुरु सेव।
झाँई मन की दूर करो अब, परखि सब्द गुरु देव॥
झगरा झूठ झाल झल त्यागो, झटक भजो सतनाम।
झीन करो मन मेलो मंदिर, तब पावो बिस्राम॥
होइ अधीन गुरु चरन गहु, कपट भाव करि दूर।
पतिब्रता ज्यों पिव को चाहै, ताके न दूजा कूर॥९॥

[ञ] इस्क बिना नहिं मिलिहै साहिब, केतो भेष बनावै।
इस्क मासूक न छिपै छिपाये, केतो छिपै छिपावै॥
इत उत इहाँ उहाँ सब छोड़ो, निःचल गहु गुरु चरना।
या से सुक्ख होय दुख नासै, मेटै जीवन मरना॥
आदि नाम है जाहि पहँ, सोई गुरु है सार।
जे कृत्तम कहँ ध्यावही, ते भव होय न पार॥ १०॥

[ट] टीम टाम बाहर बहुतेरे, दिल दासी से बंधा।
करै आरती संख बाज धुनि, टुटै न घर कै धंधा॥
टिकुली सेंदुर टकुवा चरखा, दासी ने फरमाया।
कचे बचे ने माँगि मिठाई, मगन भया मन आया॥
जिन सेवक पूजा दियो, ताहि दियो आसीस।
जहाँ नहीं कछु तहँ भे ठाढ़े, भस्म करैं जगदीस॥११॥

[ठ] ठग बहुतेरे भेष बनावैं, गले लगावैं फाँसी।
स्वाँग बनाये कौन नफा है, जो न भजे अबिनासी॥

ठोकर सहै गुरू के द्वारे, ठीक ठैार तब पावै।
ठकठक जन्म मरन का मेटै, जम के हाथ न आवै॥
मृतक होय गुरु पद गहै, ठौस* करै सब दूर।
कायर तैं नहिं भक्ति ह्वै, ठानि रहै कोइ सूर॥१२॥
[ड] डगमग तैं तो काज सरै नहिं, अडिग नाम गुन गहिये।
डर मेटै तब बिषम काल का, अछै अमर पद लहिये॥
डरते रहिये गुरू साधु से, डम्भि काम नहिं आवै।
डिम्भी होय के भवसागर मैं, डहन मरन दुख पावै॥
डेढ़ रोज का जीवना, डारो कुबुधि नसाय।
डेरा पावो सत्त लोक मैं, सतगुरु सब्द समाय॥१३॥
[ढ] ढूँढत जिसे फिरो सो ढिग है, तेरा तैं उलटि निरेखो।
ढोल मारि के सबै चेतावौं, सतगुरु सब्द बिबेखो॥
तुम हो कौन कहाँ तैं आये, कहँ है निज घर तेरा।
केहि कारन तुम भरमत डोलो, तन तजि कहाँ बसेरा॥
को रच्छक है जीव का, गहो ताहि पहिचानि।
रच्छक के चीन्हे बिना, अंत होयगी हानि॥१४॥
[ण] निर्गुन गुनातीत अबिनासी, दया-सिंधु सुख-सागर।
निःचल निःठौर निरबासी, नाम अनादि उजागर॥
निरमल अमी क्रांति अद्भुत छबि, अकह अजावन† सोई।
नख सिख नाभि नयन मुख नासा, स्रवन चिकुर‡ सुभ होई॥
चिकुरन के उजियार तैं, बिधु§ कोटिक सरमाय।
कहा क्रांति छबि बरनौं, बरनत बरनि न जाय॥१५॥
[त] ताहि पुरुष की अंस जीव यह, धर्मराय ठगि राखा।
तारन तरन आप कहलाई, बेद सास्त्र अभिलाखा॥

*अकड़। †विना जामन के। ‡बाल। §चंन्द्रमा।

तत्त्व प्रकृति तिरगुन से बंधा , नीर पवन की वारी ।
धर्मराय यह रचना कीन्ही , तहाँ जीव बैठारी ॥
जीवहिं लाग ठगौरी , भूला अपना देस ।
सुमिरन करही काल को, भुगतै कष्ट कलेस ॥ १६ ॥
[थ] थकित होय जिव भरमत डोलै, चौरासी के माहीं ।
नाना दुक्ख परै जम फाँसी , जरै मरै पछिताही ॥
थाह न पावै बिपति कष्ट की , बूड़ै संसय धारा ।
भवसागर की बिषम लहर है , सूझै वार न पारा ॥
तन बिलखै* अघ जोनि मैं, पड़ै जीव बिकरार ।
सतगुरु सब्द बिचार नहिं, कैसे उतरै पार ॥ १७ ॥
[द] दुंद बाद है और देँह मैं , परिचै तहाँ न पावै ।
नर तन लहि जो मोहिं गहै , तो जम के निकट न आवै ॥
दरस कराऔं सत्त पुरुष का , देँह हिररुबर पाइहौ ।
सुख सागर सुख बिलसौ हंसा , बहुरि जोनि नहिं आइहौ ॥
अपना घर सुख छाड़ि के , अँगवै† दुख को भार ।
कहाँ भरम बसि परे जिव , लखै न सब्द हमार ॥१८॥
[ध] धर्मराय को सबै पुकारै , धर्मै चीन्ह न पावै ।
धर्मराय तिहुँ लोकहिं ग्रासै , जीवहिं बाँधि झुलावै ॥
धोखा दै सब को भरमावै , सुर नर मुनि नहिं बाचै ।
नर वपुरे की कौन चलावै , तन धरि धरि सब नाचै ॥
असुर होय सतावही , फिर रच्छक को भाव ।
रच्छक जानि के जपै जिव, पुनि वे भच्छ कराव ॥१९॥

---

*बिलखै, रोवै । †सहै ।

[न] निरभै निडर नाम लै लावै, नकल चीन्हि परित्यागै।
नाद बिंद तें न्यार बतायो, सुरति सोहंगम जागै॥
निराधार निःतत्त्व निअच्छर, निःसंसय निःकामी।
निःस्वादी निर्लिप्त बियापित, निःचिंत अगुन सुख धामी॥
नाम-सनेही चेतहू, भाखौं घर की डोरि।
निरखो गुरु गम सुरति सों, तब चलि तन जम तोरि॥२०॥

[प] पाप पुन्य में जिव अरुझाना, पार कौन बिधि पावै।
पाप पुन्य फल भुक्तै तन धरि, फिर फिर जम संतावै॥
प्रेम भक्ति परमातम पूजा, परमारथ चित धारै।
पावन जन्म परसि पद पैहै, पारख सब्द बिचारै॥
पीव पीव करि रटन लगावै, परिहरि कपट कुचाल।
प्रीतम बिरह बिजोग जेहिं, पाँव परै तेहिं काल॥२१॥

[फ] फरामोस* कर फिकर फेल बद, फहम करै दिल माहीं।
परफुल्लित सतगुरु गुन गावै, जम तेहि देखि डेराही॥
फाजिल सो जो आपा मेटै, फना† होय गुरु सेवै।
फाँसी काटै कर्म भर्म की, सत्त सब्द चित देवै॥
फिरै फिरै नर भरम वस, तीरथ माहिं नहाय।
कहा भये नर घोर के पीये, ओस तें प्यास न जाय॥२२॥

[ब] ब्रह्म बिदित है सर्ब भूत में, दूसर भाव न होय।
बर्त्तमान चित चेतै नाहीं, भूत भविष्य बिलोय॥
बड़े पढ़े ते बिषम बुद्धि लिये, बोलनहार न जोहै‡।
ब्रह्म दुखित करि पाहन पूजै, बरबस आपु बिगोहै§॥

*भुला कर। † मृतक। ‡ खोजै। § बिगाड़ै।

बन्दि परे नर काल के, बुद्धि ठगाइनि जानि ।
बन्दी छोरौं लैचलौं, जो मोहिं गहि पहिचानि । २३॥

[भ] भाड़ परै यह देस बिराना, भवसागर अवगाहा* ।
भक्त अभक्त सभन को बोरै, कोई न पावै थाहा ॥
भच्छक आप लीला बिस्तारा, कला अनंत दिखावै ।
भच्छक को रच्छक करि जानै, रच्छक चीन्हि न पावै ॥
भजै जाहि सो भच्छक, रच्छक रहा निनार ।
भर्म चक्र मेँ परे जीव सब, लखै न सब्द हमार ॥ २४॥

[म] मन मयगर† मद मस्त दिवाना, जीवहिँ उलटि चलावै ।
अकरम करम करै मन आपहिँ, पीछे जिव दुख पावै ॥
मोह बस जीव मनहिँ नहिँ चीन्है, जानै यह सुखदाई ।
मार परै तब मन ह्वै न्यारो, नरक परै जिव जाई ॥
मन गज अगुवा काल को, परखो संत सुजान ।
अंकुस सतगुरु ज्ञान है, मन मतंग भयमान‡ ॥२५॥

[य] जो जिव सतगुरु सब्द बिबेकै§, तौ मन होवै चेरा ।
जुक्ति जतन से मन को जीतै, जियतै करै निबेरा ॥
जहँ लगि जाल काल बिस्तारा, सो सब मन की बाजी ।
मनै निरंजन धर्मराय है, मन पंडित मन काजी ॥
गुरु प्रताप भौ जोर जिव, निर्बल भौ मन चोर ।
तस्कर संधि न पावही, गढ़-पति जगै अँजोर ॥२६॥

[र] रहनि रहै रजनी नहिँ ब्यापै, रतै मतै गुरु बानी ।
राह बतावौं दया जानि जिव, जा तेँ होय न हानी ॥

---

* अथाह । † मस्त हाथी । ‡ भयानक । § बिचारै ।

रमता राम काम करि अपना, सुपना है संसारा ।
रार शोर तजि रच्छक सेवो , जा तेँ होय उबारा ॥
रैन दिवस उहवाँ नहीँ , पुरुष प्रकास अँजोर ।
राखो तेई ठाँव जिव , जहाँ न चाँपै चोर ॥ २७ ॥
[ल] लगन लगी जेहि गुरु चरनन की, लच्छन प्रगट तेहिँ ऐसा
लगन लगी लव मगन भये मन, लोक लाज कुल कैसा ॥
लगा रहै गुरु सुरत परेखै , निज तन स्वार्थ न सूझै ।
लागै ठोकर पीठ न देवै , सूरा सन्मुख जूझै ॥
लहर लाज मन बुद्धि की, निकट न आवै ताहि ।
लोटै गुरु चरनन तरे , गुरु सनेह चित जाहि ॥२८॥
[व] वाके निकट काल नहिँ आवै, जो सत सब्द समाना।
वार पार की संसय नाहीँ , वाही मेँ मन माना ॥
वासिलवाकी का डर नाहीँ , वारिस हाथ विकाना ।
वारिस को सौंपै अपने तईँ , वाही हृदय समाना ॥
वाकिफ हो सो गमि लहै , वाजिब सखुन अजूब ।
वाही की करु बन्दगी , पाक जात महबूब ॥२९॥
[श] शहर चोर घनघोर करेरे , सोवै सब घरबारी ।
शोर करैँ निर्भरमै सोवै , लागी विषम खुमारी ॥
साहिब से तो फेर दिल अपना , दुनियाँ बीच बँधाया ।
साला साली ससुरा सरहज , समधी सजन सुहाया ॥
सतगुरु सब्द चेतावहीँ , समुझि गहै कोइ सूर ।
सम बल लीजे हाथ करि, जाना है बड़ दूर ॥ ३० ॥
[ष] खलक सयाना मन बौराना, खोय जात निज कामा ।
खबर नहीँ घर खरच घटाना , चेतै रमता रामा ॥

खोलि पलक चित चेतै अजहूँ , खाविंद सौं लौ लावै ।
खाम खयाल करि दूरि दिवाना , हिरदे नाम समावै ॥
खाल भरी है बायु तँ , खाली होत न वार ।
खैर परै जेहि काम तँ , सो करु बेगि बिचार ॥३१॥

[स] सहज सील संतोष धरन[†] धर, ज्ञान बिबेक बिचार ।
दया छिमा[*] सतसंगति साधो , सतगुरु सब्द अधार ॥
सुमिरन सत्त नाम का निस दिन, सूर भाव गहि रहना ।
समर[‡] करै औ जोर परै जो , मन के संग न बहना ॥
सैन कहा समुझाइ कै , रहनी रहै सो सार ।
कहे तरै तो जग तरै , कहनि रहनि बिनु छार॥३२॥

[ह] हरि आवै हरि नाम समावै , हरि मौं हरि को जानै ।
हरि हरि कहे तरै नहिं कोई , हरि भज लोक पयानै ॥
हरि बिनसै हरि अजर अमर है, हरी हरी नहिं सूझै ।
हाजिर छाड़ि बुत्त[§] को पूजै , हसद[‖] करै नहिं बूझै ॥
हम हमार सब छाड़ि कै , हक्क राह पहिचान ।
हासिल हो मकसूद तब, हाफिज अमन अमान ॥३३॥

[क्ष] छैल चिकनियाँ अभै घनेरे, छका फिरै दीवाना ।
छाया माया इस्थिर नाहीं , फिरि आखिर पछिताना ॥
छर अच्छर निःअच्छर बूझै , सूझि गुरू परिचावै ।
छर परिहरि अच्छर लौ लावै , तब निःअच्छर पावै ॥
अच्छर गहै बिबेक करि , पावै तेहि से भिन्न ।
कहै कबीर निःअच्छरहिं , लहै पारखी चीन्ह ॥ ३४ ॥

॥ इति ॥

---

* कुशल । † धारना । ‡ युद्ध । § मूरत । ‖ द्रोह ।

कुछ पेशगी जमा कर देंगे जिस की तादाद दो रुपये से कम न हो उन्हें एक चौथाई कम दाम पर जो पुस्तकें आगे छपेंगी. विना माँगे भेज दी जायँगी यानी रुपये में चार आना छोड़ दिया जायगा परंतु डाक महसूल और वी० पी० कमिशन उन्हें देना पड़ेगा। जो पुस्तकें अब तक छप गई हैं (जिन के नाम आगे लिखे हैं) सब एक साथ लेने से भी पक्के गाहकों के लिये दाम में एक चौथाई की कमी कर दी जायगी पर डाक महसूल और वी० पी० कमिशन लिया जायगा।

अब दादू दयाल की शब्दावली, दूलन दास जी की बानी और सुंदर विलास हाथ में लिये गये हैं।

प्रोप्रैटर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

जनवरी १९१४ ई०

इलाहाबाद।

फ़िहरिस्त छपी हुई पुस्तकों की

कबीर साहिब का साखी-संग्रह (२१५२ साखियाँ)	।।।)।।
कबीर साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ तीसरा एडिशन	।।)
,, ,, ,, भाग २	।।=)
,, ,, ,, भाग ३	।)
,, ,, ,, भाग ४	=)
,, ,, ज्ञान-गुदड़ी व रेख़ते	≡)
,, ,, अखरावती	-)
,, ,, अखरावती का पूरा ग्रंथ जिस में १७ चौपाई दोहे और सोरठे विशेष हैं	-)।।
धनी धरमदास जी की शब्दावली और जीवन-चरित्र	।=)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली और जीवन-चरित्र ...	२)
,, ,, रत्न सागर मय जीवन-चरित्र ...	।।।=)
,, ,, घट रामायन दो भागों में, मय जीवन-चरित्र पहिला भाग ...	१)
,, ,, दूसरा भाग ...	१)
गुरु नानक साहिब की प्राण-संगली सटिप्पण, जीवन-चरित्र सहित पहिला भाग	१)
,, ,, ,, ,, दूसरा भाग ...	१)

दादू दयाल की बानी भाग १ (साखी) ... ...
„ „ भाग २ (शब्द) ... ... छप रा
सुंदर विलास और जीवन-चरित्र ... ... छप र
पलटू साहिब की शब्दावली (कुंडलिया इत्यादि) और जीवन-चरित्र, भाग १
„ „ „ भाग २ ... ...
जगजीवन साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ ...
„ „ „ भाग २ ... ... ॥-
दूलन दास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... छप रहा है
चरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ ... ... ॥)॥
„ „ „ भाग २ .. ... ।≡)॥
ग़रीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ॥।≥)
रैदासजी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ।-)॥
दरिया साहिब (बिहार वाले) का दरियासागर और जीवन-चरित्र ... ।-)
„ „ के चुने हुए पद और साखी ... ≡)॥
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र ... ।)॥
भीखा साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... ... ।≡)
गुलाल साहिब (भीखा साहिब के गुरू) की बानी और जीवन-चरित्र ... ॥-)॥
बाबा मलूकदासजी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ≡
गुसाईं तुलसीदासजी की बारहमासी ... ... ।
यारी साहिब की रत्नावली और ज़ीवन-चरित्र ... ...
बुल्ला साहिब का शब्दसार और जीवन-चरित्र ... ...
केशवदासजी की अमीघूँट और जीवन-चरित्र ... ...
धरनीदासजी की बानी और जीवन-चरित्र ... ...
मीरा बाई की शब्दावली और जीवन-चरित्र (दूसरा एडिशन) ... ।-
सहजो बाई का सहज-प्रकाश जीवन-चरित्र सहित (तीसरा एडिशन विशे
शब्दों के साथ) ...
दया बाई की बानी और जीवन-चरित्र ... ...
अहिल्याबाई का जीवन-चरित्र अँग्रेज़ी पद्य में ... ...

दाम में डाक महसूल व वाल्यू पेअबल कमिशन शामिल नहीं है।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद।